Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/PT)
Department Of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar.

Basic Features of Indian Philosophy (Lecture-4)

दर्शन के व्यवहारिक पक्ष पर बल :- सभी भारतीय दर्शन की प्रधान साम्य यह है कि यह दर्शन के व्यवहारिक पक्ष पर बल देता है। भारत में दर्शन का जीवन के साथ गहरा संबंध है। दर्शन का उद्देश्य केवल मानसिक जिज्ञासा दूर करना नहीं बल्कि जीवन की समस्याओं को सुलझाना है। इसलिए भारत में दर्शन जीवन का अभिन्न अंग है। दर्शन को जीवन का अंग कहने का कारण यह है कि यहाँ दर्शन का विकास विश्व के दुःखों को दूर करने के उद्देश्य से हुआ है। अतः यहाँ दर्शन 'साधन' है जबकि साध्य दुःखों से निवृति है। दर्शन को साधन मानने के कारण यहाँ के दार्शनिकों ने जीवन में चार पुरुषार्थ माने हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। चारों पुरुषार्थों में इनमें चरम पुरुषार्थ मोक्ष को माना है। मोक्ष का अर्थ है दुःख का विनाश होना एवं सुख की प्राप्ति। सभी दर्शनों में मोक्ष की धारणा अलग-अलग रहने के बावजूद मोक्ष की सामान्य धारणा में सभी दार्शनिकों की आस्था है।

(i) बौद्ध दर्शन :- बौद्ध दर्शन में मोक्ष को निर्वाण कहा जाता है। निर्वाण का अर्थ 'बुझ जाना' है। यहाँ 'बुझ जाने' का यह अर्थ नहीं है कि निर्वाण पूर्ण विनाश की अवस्था है। निर्वाण का अर्थ मृत्यु नहीं है। निर्वाण व्यक्ति अपने जीवन काल में अपना सकता है। निर्वाण अनिर्वचनीय है। निर्वाण प्राप्त हो जाने के बाद व्यक्ति के समस्त दुःखों का अन्त हो जाता है। साथ ही पुनर्जन्म की श्रृंखला भी समाप्त हो जाती है। बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार निर्वाण आनंद की अवस्था है। लेकिन यह प्रामाणिक नहीं है। निर्वाण को अपनाने के लिए बौद्ध दर्शन में अष्टांगिक मार्ग की चर्चा चतुर्थ आर्य सत्य में किया गया है।

जैन दर्शन :- जैन दर्शन मे मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। यहाँ मोक्ष का अर्थ आत्मा की अपनी स्वाभाविक स्थिति प्राप्त करना है। मोक्ष अवस्था में आत्मा पुन: अनन्त ज्ञान, अनंत शक्ति, अनन्त शक्ति अनंत दर्शन एवं अनन्त आनंद को प्राप्त कर लेती है। मोक्ष की प्राप्ति सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन एवं सम्यक चरित्र के सहयोग से संभव है।

न्याय-वैशेषिक :- न्याय वैशेषिक दर्शन में मोक्ष को दु:ख उच्छेद की अवस्था कहा जाता है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा का शरीर से वियोग होता है। चैतन्य आत्मा का स्वाभाविक गुण न होकर आगन्तुक गुण है जो शरीर से संयुक्त होने पर उदय होता है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा शरीर से अलग होता है। इसी कारण न्याय वैशेषिक दर्शन में मोक्ष को आत्मा का अचेतन अवस्था कहा गया है।

सांख्य-योग दर्शन :- सांख्य के अनुसार मोक्ष का अर्थ तीन प्रकार के दु:खो से छुटकारा पाना है। बन्धन का कारण अविवेक है। पुरुष प्रकृति और उसकी विकृतियों से भिन्न है, परन्तु अज्ञात के कारण पुरुष प्रकृति और उसकी विकृतियों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेता है। मोक्ष की अवस्था मे पुरुष प्रकृति से भिन्न समझने लगता है। बन्धन प्रतीति मात्र है, क्योंकि पुरुष स्वभावत: मुक्त है। मोक्ष की अवस्था मे आत्मा को आनन्द कि अनुभूति नहीं होती है।

मीमांसा दर्शन :- मीमांसा दर्शन मे मोक्ष सुख-दु:ख से परे की अवस्था है। यहाँ मोक्ष की अवस्था अचेतन अवस्था है, क्योंकि आत्मा मोक्ष में अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करती है, जो अचेतन है। इस अवस्था में आत्मा में ज्ञान का अभाव रहता है।